edit:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:26 PM Page 180

नागपूर, 1 मार्च 2010

तरुण भारत

एक 'कौटिल्य' का महाप्रयाण

नानाजी देशमुख के निधन से भारतीय राजनीति व रचनात्मक समाजकार्य के एक महान मनीषी व ऋषि का महाप्रयाण हुआ है। वर्तमान राजनीति, समाजनीति के कौटिल्य को हमने खो दिया है। गुणा-भाग की राजनीति, यह राजनीति का स्थाई भाव नहीं है। आज की राजनीति में केवल दाम, दंड, भेद का ही इस्तेमाल होता है, साम मार्ग का इस्तेमाल नहीं होता। लेकिन नानाजी ऐसे मनीषी व राजनीतिज्ञ थे कि उन्होंने इस मार्ग का इस्तेमाल कर राजनीति की छुआछूत को समाप्त किया। तत्कालीन जनसंघ के साथ कोई भी दल साथ आने तैयार नहीं होता था, लेकिन नानाजी ने उन सभी को जनसंघ का संज्ञान लेने और सत्ता की राजनीति में अपने साथ लेने के लिए बाध्य किया। यदि जनसंघ में नानाजी पर्व नहीं होता तो शायद इतनी आसानी से जनसंघ राजनीति के मुख्य प्रवाह का हिस्सा नहीं होता। 1951 में जनसंघ का गठन हुआ और मात्र तीन सांसद 1952 के चुनाव में लोकसभा में पहुंचे थे, लेकिन इसी जनसंघ को नानाजी ने उत्तर प्रदेश में संयुक्त विधायक दल (संविद) सरकार तक पहुंचाया।

भारतीय राजनीति में नेहरू पर्व और कांग्रेस पर्व का विरोध करने वाले जो थे, उन्हें नानाजी ने अपने संगठन-कौशल्य से एकत्रित किया। डॉ. राममनोहर लोहिया और पं. दीनदयालजी उपाध्याय, इन दोनों की मुलाकात करा दी और इससे भारत में कॉंग्रेसविरोधी माहौल गरमाने लगा। 1962 में चीनी आक्रमण के बाद नेहरू पर्व अंतिम चरण में था, उस वक्त नानाजी ने जनसंघ का उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में गठन किया। कांग्रेस के खिलाफ 1960 में एक विशाल मोर्चा गठित हुआ और उत्तर प्रदेश में चौधरी चरणसिंह के साथ जनसंघ ने सत्ता में सहभागिता की। उत्तर प्रदेश की राजनीति में चन्द्रभान गुप्ता पर्व समाप्त हुआ। एक-दो बार नहीं तो चार बार गुप्ता को हार देखनी पड़ी। बाद में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में नवनिर्माण आंदोलन हुआ। जयप्रकाश नारायण पर बरस रही लाठियों को नानाजी ने अपने शरीर पर झेला और इसी में नानाजी का हाथ टूटा। इसी आंदोलन के जरिये नानाजी ने जयप्रकाश नारायण को मुख्य राजनीति के प्रवाह में लाया। जून, 1975 में आपातकाल जारी हुआ और सारा राजनीतिक परिदृश्य ही बदल गया। आपातकाल के बाद हुए चुनाव में कांग्रेस की बहुत बुरी तरह पराजय हुई। उसके बाद जनता पार्टी का गठन हुआ। नानाजी महासचिव बने। मोरारजी देसाई सरकार के मंत्रिमंडल का गठन हो रहा था। इसमें जनसंघ के हिस्से में तीन स्थान थे जिसमें अटलजी, आडवाणीजी और नानाजी को लिया जाना था। लेकिन नानाजी ने मंत्री पद लेने से साफ इनकार कर दिया। मैं यदि मोरारजी के मंत्रीपरिषद में मंत्री बन कर रहूंगा, तो मोरारजी से कैसे कुछ कह पाऊंगा? ऐसा सवाल कर नानाजी ने मंत्री पद को नकार दिया। नानाजी और मधु लिमये मंत्रिमंडल में शामिल नहीं हुए। आगे चलकर नानाजी ने आयु के 60वें वर्ष में राजनीति से निवृत्त होने का फैसला किया और सचमुच में वे राजनीति से निवृत्त हुए। दोबारा उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

नानाजी बेहद गरीब परिवार में जन्मे थे। अपनी पढ़ाई और जीवनयापन हेतु कितने कष्ट उठाने पड़ते हैं, इसका उन्होंने प्रत्यक्ष अनुभव लिया था। अपनी पढ़ाई के लिए उन्होंने सब्जी बेची। बाल्यावस्था में जो दिक्कतें उन्होंने अनुभव कीं, उसके आधार पर उन्होंने बच्चों के जीवन में स्वर्ग जैसी खुशियां लाने और उनके जीवन को खुशहाल बनाने पर चिंतन किया। इसके परिणामस्वरूप बाद में नागपुर में बालजगत का बीजारोपण किया। नानाजी अर्थात् सामाजिक समस्याओं की खोज कर और उसका समाधान ढूंढनेवाली एक प्रयोगशाला थी। उनसे मिलते वक्त किसी बड़े वैज्ञानिक से मिलने का अहसास होता था। नानाजी ने दीनदयाल उपाध्याय के जीवन सिद्धांत एकात्म मानवदर्शन को प्रत्यक्ष अमल में लाने का प्रयास गोंडा जिले में किया। इससे पूर्व सरस्वती शिशु मंदिर का प्रयोग उन्होंने किया। गोंडा जिले का संपूर्ण चित्र ही बदल दिया। नानाजी ने दीनदयाल शोध संस्थान का गठन किया। 1991 में चित्रकूट में देश के पहले ग्रामीण विश्वविद्यालय की स्थापना की और साढ़े तीन वर्ष तक वे उसके कुलाधिपति रहे। चित्रकूट के आस-पास के पांच सौ (500) गांवों का सर्वांगीण विकास करने के उद्देश्य से उन्होंने विभिन्न कार्यक्रम और प्रकल्प प्रारंभ किये। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल विहारी वाजपेयीजी ने एक प्रसंग में कहा, जिन्हें भारत के भविष्य को लेकर संदेह है, देश में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता, ऐसी जिनकी धारणा है, यह देश गलत दिशा में जा रहा है, ऐसा जिनका पक्का विश्वास है, उन सभी को चित्रकूट आकर देखना चाहिए। परिवर्तन क्या है? कायाकल्प क्या है? गरीबी दूर करना यानी क्या है? इसका साफ और स्पष्ट दर्शन चित्रकूट में होगा। देश के उज्ज्वल भविष्य पर विश्वास होगा। राजनीति से बाहर आने के बाद मूलभूत काम करने का उनका इरादा था। विकास का मार्ग गांव से ही जाता है। इसके बारे में मन में कोई संदेह नहीं है। महात्मा गांधी और पं. दीनदयालजी के मूल चिंतन का प्रभाव उन पर था। समाज की जो आवश्यकता है, वह ग्रामीण क्षेत्र में है, यह ध्यान में आने के बाद इस मूल चिंतन को नानाजी ने नई दिशा दी। अलग-अलग प्रयोगों के माध्यम से वे इस चिंतन पर अमल करते थे। राजनीति को छोड़कर ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक कार्य हेतु जाते समय उनका विचार सकारात्मक ही था। नकारात्मक सोच से उन्होंने राजनीति नहीं छोड़ी थी। उनके चिंतन का आधार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विचार ही था। संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार के कारण ही वे संघ में आये और प्रचारक के नाते कार्य करने निकल पड़े। अपने जीवन में विलक्षण गरीबी का उन्होंने प्रत्यक्ष अनुभव लिया था और इसी के कारण गरीबों के बारे में उनके मन में अपार संवेदना और करुणा थी। इस गरीबी को वे अपने जीवन में कभी भूल नहीं पाये और इसी के कारण आगे चलकर बड़े, अमीर, धनवान लोगों के बीच रहते हुए भी वह कभी धन और अमीरी की मायामोह के जाल में नहीं फंसे। देश के प्रति अपने कर्तव्यों को वे कभी नहीं भूलते थे। राष्ट्र के लिए संपूर्ण समर्पण की प्रेरणा उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से ली। प्रचारक बनकर संघकार्य के लिए निकल पड़े। 1948 में राष्ट्रधर्म प्रकाशन के प्रबंध संचालक बने। संपूर्ण जीवन उन्होंने विभिन्न दलों में अपने मित्र जोड़े। राममनोहर लोहिया, राजनारायण, मधु लिमये, उद्योगपति रामनाथ गोयनका, नुस्ली वाडिया, वकुल पटेल, पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर और जिनको नानाजी के कारण ही हार का सामना करनेवाले चन्द्रभान गुप्ता भी नानाजी के मित्र थे। चन्द्रभान गुप्ता तो नानाजी को नाना फड़णवीस कहते थे। नानाजी ने इस मित्र-परिवार के माध्यम से काफी मात्रा में धनराशि इकट्ठा की और वह सामाजिक कार्य में लगाई, लेकिन धन के बारे में नैतिकता का उन्होंने पूरा-पूरा पालन किया। किसी से प्राप्त धनराशि को जिस कार्य के लिए मांगा गया था उसे उसी काम के लिए इस्तेमाल किया। आरोग्यधाम के लिए आए पैसे को बालजगत अथवा अन्य किसी कार्यक्रम हेतु इस्तेमाल नहीं होने दिया। इन प्रकल्पों के लिए नानाजी ने पुनः धनसंग्रह किया, लेकिन विदेशी सहायता नहीं लेने को लेकर वे बहुत ही आग्रही थे। इसी तरह वे अपने नाम का इस्तेमाल नहीं करने पर भी पराकोटी की आग्रही भूमिका का अमल करते थे। चित्रकूट परिसर और देश में अन्यत्र अनेक कार्यक्रम और योजनाएं शुरू कीं, लेकिन कहीं पर भी नानाजी का अपना स्वयं का नाम नहीं है। चित्रकूट परिसर में उनके नाम से कहीं पर भी शिलान्यास नहीं हुआ। नानाजी ब्रम्हचारी थे, किन्तु किसी भी गृहस्थाश्रमी व्यक्ति को ईर्ष्या होगी, उन्होंने अपने परिवार का ऐसा विस्तार किया। कई परिवारों में उनका स्थान काफी महत्वपूर्ण था और वे उन परिवारों का अभिन्न हिस्सा थे। जैसे, नागपुर के प्रभाकरराव मुंडले के परिवार के वे अविभाज्य घटक थे। केवल प्रभाकरराव ही नहीं तो अनेक परिवारों में नानाजी का अपना स्वयं का स्थान था। नानाजी के निधन से अनेक परिवार अनाथ हुए हैं।

नानाजी ने राजनीति से निवृत्त होने के बाद राजनीतिक विश्लेषण करना कई वर्षों तक सुनियोजित तरीके से टाल दिया था, लेकिन राजीव गांधी का राजनीति में प्रवेश होने पर भाजपा को उनसे सहयोग कर सहायता का हाथ आगे बढाना चाहिये और कांग्रेस और भाजपा को एकत्रित होना चाहिये, इस विचार का प्रतिपादन किया था। वे गलत नहीं थे, अचूक थे। आगे चलकर अनेक बुद्धिजीवियों ने इस विषय को आगे बढ़ाया, लेकिन नानाजी की ही आलोचना हुई। कहा गया कि उन्हें इस तरह की सलाह नहीं देनी चाहिये। लेकिन नानाजी ने अपना दिया हुआ वक्तव्य पीछे नहीं लिया। वह राजनीति के चाणक्य थे। इसलिए उस प्रतिपादन के पीछे निश्चित ही कोई सकारात्मक व दूरदर्शी विचार होगा। उनके सुझाव के अनुसार यदि हुआ होता तो क्या होता, इसका अनुमान तो आज नहीं लगाया जा सकता, लेकिन संभवतः इससे भारतीय राजनीति को नई दिशा मिल जाती। इसका परिणाम अंततः देश हित में ही होता, लेकिन वह नहीं हुआ। राजनीतिक इतिहास को एक नया मोड़ नहीं मिला। इसे हमने देखा है। नानाजी ९४ वर्ष का परिपूर्ण जीवन जीये और बेहद संतुष्ट जीवन जी कर उन्होंने देहत्याग किया। उन्हें संपूर्ण देश और समस्त तरुण भारत परिवार की भावपूर्ण श्रद्धांजलि!